डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा पूर्वोत्तर तथा पश्चिमी लेखक सम्मिलन का आयोजन

हर भाषा का साहित्य मानवता की ही आवाज – नगेन शइकिया

भाषायी विविधता का उत्सव है यह सम्मिलन – चंद्रशेखर कंबार

नई दिल्ली 27 जुलाई 2021। साहित्य अकादेमी ने अपनी वेब लाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत आज आभासी मंच पर पूर्वोत्तर तथा पश्चिमी लेखक सम्मिलन का आयोजन किया, जिसमें दोनों क्षेत्रों के 27 रचनाकारों ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने देते हुए कहा कि दो विभिन्न क्षेत्रों के रचनाकारों को एक दूसरे के पास लाने के उद्देश्य से इस तरह के सम्मिलन का आयोजन किया जा रहा है। यह सम्मिलन दो क्षेत्रों की विभिन्न संस्कृतियों को एक दूसरे से जोड़ने का प्रयास भी है। सम्मिलन का उद्घाटन प्रख्यात असमिया लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य नगेन शइकिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि मैं इस सम्मिलन में जहाँ से सूर्य उगता है और जहाँ डूबता है के प्रतिकात्मक स्वरूप को महसूस कर पा रहा हूँ। यह बिल्कुल ही अनूठी कल्पना है जो बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक भी है। भाषाओं की विविधता के बाद भी हर भाषा का साहित्य मानवता की ही आवाज होता है। उन्होंने इस सम्मिलन में युवाओं की भागेदारी पर भी हर्ष व्यक्त किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि यह दो क्षेत्रों के बीच का मिलन है और इसमें अपार संभावनाएँ हैं। यह दोनों क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से जुड़े हुए हैं और इस कार्यक्रम के दौरान ब्रिटेन के उपनिवेश और स्वाधीन भारत के बाद के साहित्य को जानने और समझने में आसानी होगी। आगे उन्होंने कहा कि भूमंडलीकरण के इस समय में हमारे गाँव और वहाँ की स्थानीय संस्कृति किस प्रकार प्रभावित हो रही है यह जानना भी आवश्यक है। उन्होंने ऐसे आयोजनों को भाषायी विविधता के उत्सव की संज्ञा देते हुए स्थानीय परंपराओं का संरक्षक बताया।

उसके बाद कविता–पाठ कार्यक्रम था, जिसमें कौशिक किसलय (असमिया), गोपीनाथ ब्रह्मा (बोडो) डेसमंड खर्माफ्लांग (अंग्रेजी पूर्वोत्तर) हिमल पांड्या (गुजराती), पूर्णानंद चारी (कोंकणी), विनोद कुमार सिन्हा (मणिपुरी), प्रकाश होलकर (मराठी) और विनोद असुदानी (सिंधी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सभी कवियों ने पहले अपनी मातृभाषा में और उसके बाद अंग्रेजी और हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किए। सत्र के अंत में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि दोनों क्षेत्रों की को भाषाओं के कवियों का सरोकार एक ही है। सभी का दिल एक ही प्रकार धड़कता है और इन कविताओं में उनकी माटी की सुगंध भी महसूस की जा सकती है। आगे उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से देश की रचनात्मक एकता को पाठकों तक पहुँचाने में सहायता मिलती है।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कहानी–पाठ का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता एन. किरणकुमार ने की और मीना खेरकत्री (बोडो), एन.शिवदास (कोंकणी) ने अपनी अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। विचार विमर्श सत्र का विषय 'क्या कविता का अंत हो रहा है?'था जिसकी अध्यक्षता प्रदीप आचार्य ने की और इसमें अपना पक्ष रखने वालों में प्राणजीत बोहरा (असमिया), दर्शिनी दादावाला (गुजराती), केएसएच. प्रेमचंद सिंह(मणिपुरी) एवं नामदेव ताराचंदानी (सिंधी) थे। तृतीय और अंतिम सत्र कवि सम्मिलन था जिसकी अध्यक्षता वासदेव मोही ने की और दिगंत निबिर (असमिया), अकबर अहमद (बांग्ला पूर्वोत्तर), लंकेश्वर हाईनारी (बोडो), ऊषाकिरण अत्राम (गोंडी), विवेक टेलर (गुजराती), ओ. मेमा देवी (मणिपुरी), किशोर कदम (मराठी), एस.डी. ढकाल (नेपाली पूर्वोत्तर) और हिना अग्नानी (सिंधी) ने कविताएँ प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी में उपसचिव कृष्णा किम्बहुने ने किया।

के. श्रीनिवासराव